टिप्पणी

11

वित्त के अल्पकालिक स्रोत

अनिल सिंह पिछले दो साल से एक रेस्तरां चला रहे हैं। उनके भोजन की उत्कृष्ट गुणवत्ता ने कुछ ही समय में उनके रेस्तरां को लोकप्रिय बना दिया है। अपने व्यवसाय की सफलता से प्रेरित होकर श्री सिंह अब विभिन्न स्थानों पर समान रेस्तरां की एक शृंखला खोलने के बारे में सोच रहे हैं। हालांकि, अपने व्यक्तिगत स्रोतों से उनके पास उपलब्ध धन उसके व्यवसाय की विस्तार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। उनके पिता ने उन्हें बताया कि वह इसके रेस्तरां के मालिक के साथ साझेदारी कर सकते हैं, जो अधिक धन लाएगा, लेकिन उसके लिए वह भविष्य में लाभ के बंटवारे और व्यवसाय पर नियंत्रण भी करना चाहेंगे। इसलिए वह अब बैंक से ऋण लेने की सोच रह है। वह चिंतित और भ्रमित है, क्योंकि उसके पास कोई विचार नहीं है कि उसे कैसे और कहां से अतिरिक्त धनराशि प्राप्त करनी चाहिए। वह अपने दोस्त रमेश के साथ इस समस्या पर चर्चा करता है, जो उसे धन जुटाने के कुछ अन्य तरीकों के बारे में बताता है। वह आगे उसे सावधान करते हैं कि प्रत्येक विधि के अपने फायदे और सीमाएं हैं और उनकी स्वयं की पसंद उस उद्देश्य और अवधि जैसे कारकों पर आधारित होनी चाहिए जिसके लिए धन की आवश्यकता होती है। वह इन तरीकों के बारे में सीखना चाहता है।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी:

- वित्त के अल्पकालिक स्रोतों का वर्णन करता है;
- अल्पकालिक धन स्रोतों और उपकरणों की पहचान करता है; और
- दीर्घकालिक कोष प्रदान करने वाले दीर्घकालिक वित्त, स्रोतों और संस्थानों की पहचान करता है।

टिप्पणी

11.1 व्यवसाय वित्त व्यवसाय

वित्त से तात्पर्य व्यापार में लगाए गए पैसे और क्रेडिट से है। वित्त व्यवसाय का आधार है। इसकी आवश्यकता संपत्ति, माल, कच्चे माल की खरीद और अन्य आर्थिक गतिविधियों के प्रवाह के लिए होती है। व्यावसायिक वित्त व्यवसाय द्वारा जब जरूरत हो तो धन प्रदान करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

11.1.1 व्यापार को वित्तीय आवश्यकताएँ

प्रत्येक व्यवसाय को पूंजी की आवश्यकता होती है। व्यापार की शुरूआत के समय पूंजी की आवश्यकता होती है। यह तब भी आवश्यक है जब व्यवसाय संचालन में हो। एक उद्यम आकार में बढ़ता है और फैलता है, इसे स्थापित करने के लिए वित्त की आवश्यकता होती है। व्यवसाय के लिए पूंजीगत आवश्यकताओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है, जिनकी चर्चा निम्न प्रकार से की जाती है-

- स्थायी पूंजी
- कार्यशील पूंजी

1. **स्थायी पूंजी**- प्रत्येक व्यवसाय को अपनी परिचालन गतिविधियों को शुरूआत के लिए पर्याप्त मात्रा में स्थायी पूंजी की आवश्यकता होती है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है, विभिन्न स्थायी संपत्तियों में निवेश की गई पूंजी की मात्रा जो किसी व्यवसाय के संचालन के लिए आवश्यक है, स्थायी पूंजी के रूप में जानी जाती है। यह स्थायी संपत्ति, भूमि, भवन मशीनरी, उपकरण इत्यादि हो सकती है। स्थायी संपत्तियां सामान्यत: अपना रूप नहीं बदलती है और व्यापार से तुरंत नहीं निकाली जा सकती है। इस प्रकार स्थायी पूंजी उन संपत्तियों की खरीद के लिए आवश्यक धनराशि है जिन्हें व्यापार में लम्बे समय तक और अधिक समय तक उपयोग किया जाना चाहिए। गैर चालू संपत्तियां जैसे ख्याति, पेटेंट, अधिकार, कॉपीराइट, दीर्घकालिक प्राप्य वस्तुएं आदि में निवेश स्थायी सम्पत्तियों के भाग हैं। स्थायी संपत्तियों में निवेश के लिए आवश्यक पूंजी की मात्रा आकार और व्यवसाय के उत्पादन की विधि के साथ भिन्न होती है। संक्षेप में, स्थायी पूंजी में अचल संपत्ति और अन्य गैर चालू संपत्ति शामिल है।

   स्थायी पूंजी का महत्व- शुरूआत में ही यानि, व्यवसाय की कल्पना, ज़मीन की खरीद भवन-निर्माण, मशीनरी की खरीद, आदि के लिए पूंजी की जरूरत होती है। मशीनरी के विस्तार और उसके आधुनिकीकरण के लिए भी पूंजी की आवश्यकता होती है इसलिए उद्यम में पर्याप्त मात्रा में स्थायी पूंजी होनी आवश्यक है।

2. **कार्यशील पूंजी**- बैलेंस शीट के अनुसार, कार्यशील पूंजी एक व्यवसाय की चालू संपत्ति और दायित्वों के बीच का अंतर है। चालू सम्पत्तियां वह संपत्तियां होती है, जिन्हें

आसानी से एक लेखा वर्ष में व्यवसाय में थोड़े समय के भीतर नकदी में बदला जा सकता है। इसमें हस्तस्थ रोकड़ और बैंक शेष, प्राप्य बिल, अल्पकालिक निवेश और स्टॉक शामिल हैं। दूसरी ओर चालू दायित्वों वे होते हैं, जिनका भुगतान मौजूदा परिसंपत्तियों में से एक लेखा वर्ष की एक छोटी अवधि के भीतर किया जाना है जिनमें देय बिल, अल्पवधि ऋण, बैंक ओवर ड्राफ्ट, देय लाभांश, कर देय आदि शामिल हैं।

कार्यशील पूंजी को चक्रीय पूंजी भी कहा जाता है, यह व्यवसाय का जीवन काल होती है और कभी भी केन्द्र में नहीं होती है। कार्यशील पूंजी का उपयोग ज्यादातर कच्चे माल की खरीद, मजदूरी का भुगतान, व्यवसाय की मौसमी तत्काल मांगें, बिक्री के लिए अधिक सामानों की खरीद, विज्ञापन के खर्चों को पूरा करने, ग्राहकों को ऋण सुविधा प्रदान करने आदि के लिए किया जाता है।

चालू समितियां - चालू दायित्व = कार्यशील पूंजी

चालू परिसंपत्तियों और चालू देनदारियों के बीच का अधिक्य व्यवसाय की सकारात्मक कार्यशील पूंजी है। यदि अंतर नकारात्मक है, तो व्यापार में नकारात्मक या अपर्याप्त कार्यशील पूंजी होती है।

3. **कार्यशील पूंजी का महत्व**- कार्यशील पूंजी के महत्व पर नीचे चर्चा की गई है।

(अ) **व्यापार को शोधन क्षमता**- यह व्यापार की शोधन क्षमता को बढ़ाता है। उत्पादन का प्रवाह निर्बाध बना रहता है।

(ब) **ख्याति**- एक उधमी अपने कर्मचारियों को समय पर भुगतान करने में सक्षम होता है। यह व्यवसाय में ख्याति को बढ़ाता है।

(स) **अनुकूल शर्तों पर ऋण प्राप्त करना**- एक व्यवसाय की यदि शोधन क्षमता बेहतर है और इससे उसकी ख्याति बढ़ती है तो किसी भी बैंक से सहजता से ऋण मिल जाता है।

(द) **नकद छूट**- पर्याप्त कार्यशील पूंजी वाला व्यवसाय खरीद में नकद छूट प्राप्त कर सकता है जो लागत को कम करने में सहायक होती है।

(य) **संकट का सामना करने में सक्षम बनाता है**- एक पर्याप्त कार्यशील पूंजी एक उद्यम को व्यावसायिक संकट का सामना करने में सक्षम बनाती है।

(र) **लाभांश का नियमित भुगतान**- पर्याप्त मात्रा में कार्यशील पूंजी एक व्यवसाय को लाभ कमाने और निवेशकों को समय पर लाभांश का भुगतान करने में सक्षम बनाती है।

पाठगत प्रश्न-11.1

1. कार्यशील पूंजी की गणना के लिए उपयोग किया जाने वाले सूत्र हैं-

   (i) चालू सम्पत्तियाँ - चालू दायित्व

   (ii) चालू दायित्व - चालू सम्पत्तियाँ

   (iii) चालू दायित्व - सामग्री

   (iv) ...../.....

2. .....कुछ समग्र लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए संपत्ति के अधिग्रहण वित्तपोषण और प्रबंधन से संबंधित है।

   (i) वित्तीय प्रबन्ध

   (ii) लाभों का अधिकतम ऋण

   (iii) एजैंसी सिद्धांत

   (iv) सामाजिक जिम्मेदारी।

11.2 व्यावसायिक वित्त के प्रकार

वित्त की आवश्यकता लम्बी अवधि, मध्यम अवधि या अल्पकालिक समय के लिए हो सकती है। एक संगठन से दूसरे संगठन में, स्थिर और कार्यशील पूंजी के संबंध में स्थिर एवं कार्यशील पूंजी की आवश्यकता भिन्न हो सकती है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, विभिन्न स्रोतों से धन जुटाने की आवश्यकता होती है। कुछ स्रोत जैसे अंश और ऋण अवधि के लिए धन प्रदान करते हैं। ये दीर्घकालिक वित्त के स्रोतों के रूप में जाने जाते हैं। इसी तरफ व्यापारिक साख, नकद साख, ओवर ड्राफ्ट बैंक ऋण आदि जैसे स्रोत जो थोड़े समय के लिए उपलब्ध होते हैं वे अल्पवधि वित्त के स्रोत कहे जाते हैं। इसलिए उस अवधि के आधार पर जिसके लिए धन की आवश्यकता होती है, उस व्यावसायिक पूंजी को श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

1. अल्पकालीन पूंजी
2. मध्यकालीन पूंजी
3. दीर्घकालीन पूंजी

अल्पकालीन पूंजी- अल्पवधि कोष वे हैं जो एक वर्ष से कम की अवधि के लिए आवश्यक है। व्यापारिक साख, वाणिज्यिक बैंकों से ऋण और व्यापार पत्र कुछ ऐसे स्रोत हैं जो छोटी अवधि के लिए धन प्रदान करते हैं। अल्पकालिक वित्तपोषण, प्राप्य बिल और सामग्री जैसी कुछ संपत्तियों के वित्तीय के लिए सामान्यत: रूप में किया जाता है।

मध्यकालीन पूंजी- जहां एक वर्ष से अधिक की अवधि लेकिन पांच वर्ष से कम अवधि के लिए धनराशि की आवश्यकता होती है, इसके लिए वित्त के मध्यम अवधि के स्रोतों का उपयोग किया जाता है। इन स्रोतों में वाणिज्यिक बैंकों से उधार लेना, सार्वजनिक जमा, पट्टा, वित्तपोषण और वित्तीय संस्थानों के ऋण शामिल हैं।

दीर्घकालीन पूंजी- दीर्घकालीन स्रोत किसी उद्यम को वित्तीय आवश्यकताओं को पांच साल से अधिक की अवधि के लिए पूरा करते हैं और इसमें अंश और ऋण पत्र, दीर्घकालिक उधार और वित्तीय संस्थानों से ऋण जैसे स्रोत शामिल होते हैं। इस तरह का वित्त पोषण को उपकरण, संयंत्र आदि जैसे अचल संपत्तियों के अधिग्रहण के लिए आम तौर पर आवश्यक होता है।

इस पाठ में, हम वित्त के विभिन्न स्रोतों के बारे में और उनके योग्यता और दोषों के विषय में विस्तार से बात करेंगे।

11.2.1 अल्पकालीन वित्त

अल्पकालीन वित्त- यह वह वित्तीय संसाधन होता है जो सामान्यत: एक वर्ष से भी कम समय के लिए वित्त प्रदान करता है। इसे कार्यशील पूंजी वित्त पोषण के रूप में भी जाना जाता है। अल्पकालीन कोषों की उपलब्धता आवश्यक है। अल्पकालीन धन की अपर्याप्तता, व्यवसाय को बंद करने का कारण बन सकती है।

11.2.2 अल्पकालीन पूंजी के उद्देश्य

अल्पकालीन वित्त के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं-

(i) यह दिन-प्रतिदिन की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करके व्यापार संचालन को सहज बनाता है।

(ii) यह फर्मों को कच्चे माल और तैयार उत्पादों के स्टॉक रखने में सक्षम बनाता है।

(iii) अल्पकालीन वित्त की उपलब्धता से माल उधार बेचा जा सकता है। बिक्री एक निश्चित अवधि के लिए होती है और देनदारों से पैसे के संग्रह में समय लगता है। इस समय के अंतर के दौरान, व्यवसाय के विभिन्न संचालन को वित्त पोषित करने के लिए उत्पादन में निरंतर धन की आवश्यकता होती है।

(iv) अल्पकालीन वित्त तब और अधिक आवश्यक हो जाता है जब एक छोटी सूचना पर उत्पादन की मात्रा बढ़ाना आवश्यक होता है।

(v) अल्पकालीन वित्त इसलिए भी आवश्यक होता है ताकि प्रचालन चक्र के दौरान नकदी का प्रवाह हो सके। परिचालन चक्र उत्पादन के शुरू होने और बिक्री की वसूली के बीच के समय के अंतराल को बताता है।

11.2.3 अल्पकालीन वित्त के गुण एवं दोष

अल्पकालीन ऋण, व्यावसायिक संगठनों की अस्थायी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करते हैं। वे संगठन पर ब्याज का भारी दबाव नहीं पड़ने देते हैं। लेकिन कभी-कभी संगठन अनिश्चितता और अन्य कारणों के कारण ऐसे ऋणों से दूर रहते हैं। आइये हम अल्पकालीन वित्त के गुणों एवं अवगुणों की जांच करें।

(अ) **मितव्ययी**- अल्पकालीन वित्त को एक छोटे नोटिस पर व्यवस्थित किया जा सकता है और इसमें किसी भी तरह की लागत शामिल नहीं होती है। देय ब्याज की राशि भी सस्ती है। इस प्रकार अल्पकालीन वित्त जुटाने के लिए अपेक्षाकृत अधिक मितव्ययी है।

(ब) **लचीलापन**- अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकता को पूरा करने के लिए ऋण आवश्यकता के अनुसार लिया जा सकता है। यह व्यवसाय को लचीलापन प्रदान करता है।

(स) **प्रबंधन में कोई हस्तक्षेप न देना**- अल्पकालीन वित्त के ऋणदाता ऋणी संस्था के प्रबंध में हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं। प्रबन्ध को निर्णय करने की स्वतंत्रता होती है।

(द) **इसके द्वारा दीर्घकालीन उद्देश्यों की पूर्ति भी होती है**- आमतौर पर व्यापारिक फर्में अल्पकालीन ऋण को नवीनीकृत करती रहती है। उदाहरण के लिए, एक वर्ष के लिए नकद ऋण होता है लेकिन वार्षिक समीक्षा के साथ इसे तीन साल तक बढ़ाया जा सकता है। तीन साल बाद इसका नवीनीकरण किया जा सकता है। इस प्रकार, अल्पकालीन वित्त के स्रोत कभी-कभी दीर्घकालीन उद्देश्यों के लिए धन प्रदान कर सकते हैं।

अल्पकालीन वित्त कुछ दोषों से भी ग्रस्त है जो नीचे सूचीबद्ध है-

(अ) **स्थायी बोझ**- चाहे लाभ हो या हानि, सभी ऋणों की भांति अल्पकालीन ऋणों पर ब्याज का भुगतान करना होता है। यही कारण है कि व्यावसायिक फर्म अल्पकालीन वित्त का उपयोग केवल अस्थायी उद्देश्यों के लिए करते हैं।

(ब) **संपत्ति पर प्रभार**- ऐसी स्थिति में उधार होने वाली संस्था इन सम्पत्तियों के आधार पर आगे और उधार नहीं ले सकती है और न ही ये सम्पत्तियां बेची जा सकती हैं जब तक कि ऋण का पुनर्भुगतान नहीं हो जाता है।

(स) **वित्त प्राप्त करने में कठिनाई**- जब व्यावसायिक फर्मों को भारी मात्रा में नुकसान होता है या बाजार में मांग घटती है या उद्योग मंदी की स्थिति में होता है, तो यह उसकी ऋण योग्यता को नुक्सान पहुंचाता है।

(द) **अनिश्चितता**- संकट की स्थिति में, व्यापार को हमेशा अल्पकालिक वित्त के स्रोतों से धन प्राप्त करने की अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है। यदि आवश्यक वित्त की मात्रा बड़ी है, तो वित्त प्राप्त करना भी अधिक अनिश्चित है।

(य) कानूनी औपचारिकता- अल्पकालीन स्रोतों से वित्त जुटाने के लिए कुछ निश्चित कानूनी औपचारिकताओं का अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि अंशों को सुरक्षा के रूप में जमा करना है तो ट्रांसफर डीड तैयार करनी होगी। ऐसी औपचारिकताओं में बहुत समय लगता है और बहुत सारी जटिलताएं जन्म लेती है।

पाठगत प्रश्न-11.2

उपयुक्त चयन के साथ निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें।

(अ) अल्प अवधि ऋण आवश्यक है दिन प्रतिदिन के व्ययों को ..... (पूरा करने के लिए, समायोजन करने के लिए)

(ब) अल्पकालिक उद्देश्यों के लिए धन जुटाना....., (महंगा मितव्ययी है)

(स) व्यापार साख को सबसे अच्छे रूप में वर्णित किया जा सकता है-

(i) दीर्घकालीन पूंजी

(ii) मध्यकालीन पूंजी

(iii) अल्पकालीन पूंजी

(iv) दीर्घकालीन सुरक्षा

11.3 अल्पकालीन पूंजी जुटाने की विधियाँ

जैसा कि हमने अभी समझा कि जब हमें अल्पकालीन वित्त पोषण की आवश्यकता होती है तो व्यापार के अल्पकालीन वित्तपोषण बढ़ाने के लिए कई तरीके होते हैं। प्रत्येक प्रकार के लघु अवधि के वित्त में अलग-अलग अल्पकालीन वित्त बढ़ाने के लिए कई तरीके हैं जो नीचे सूचीबद्ध है। उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं-

चित्र 11.1 अल्पावधि वित्त के स्रोत

11.3.1 व्यापारिक साख/क्रेडिट (Trade Credit)

व्यापारिक साख/क्रेडिट से तात्पर्य कच्चे माल, तैयार माल आदि के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा निर्माताओं और व्यापारियों को दी गई साख/क्रेडिट से है। आमतौर पर व्यावसायिक उद्यम 30 से 90 दिनों की साख/क्रेडिट पर आपूर्ति खरीदते हैं। यह देय खातों द्वारा विस्तारित किया जाने वाले ऋण है। हम इस साख को दो प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते हैं- नि:शुल्क व्यापारिक साख एवं भुगतानी व्यापारिक साख/क्रेडिट भुगतान की शर्तों के अनुसार एक निश्चित तिथि के बाद, आपूर्तिकर्ता, भुगतान की देरी पर ब्याज लेता है। इसलिए इससे पहले की अवधि नि:शुल्क व्यापारिक साख है और उसके बाद भुगतान की गई व्यापारिक साख।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नि:शुल्क व्यापारिक साख यथा संभव प्रयोग की जानी चाहिए क्योंकि यह नि:शुल्क है। एक ग्राहक को कितनी नि:शुल्क व्यापारिक साख दी जाती है यह खरीददार की साख पर निर्भर है। भुगतान प्रतिबद्धताओं में अनुरक्षित अनुशासन, व्यवसाय की मात्रा आदि कारणों पर आपकी दर जितनी अधिक होगी, आपके व्यापार के लिए उच्चतर नि:शुल्क साख उतना ही अधिक होगी।

भुगतान की गई व्यापारिक साख निश्चित रूप से एक प्रकार का अल्पकालिक वित्त पोषण है, लेकिन प्राथमिकता की सूची में यह काफी नीचे होगी। संक्षेप में इसे तभी चुना जाना चाहिए जब अन्य वित्त पोषण उपलब्ध न हो। उनके लिए न चुनने का कारण इसकी उच्च ब्याज की लागत है।

व्यापारिक साख के गुण- व्यापारिक साख के प्रमुख गुण नीचे दिए गए हैं-

(i) व्यापारिक साख, कोषों का, एक सुविधाजनक एवं निरंतर चलने वाला स्रोत है।

(ii) विक्रेता की साख योग्यता ज्ञात होने की स्थिति में, व्यापारिक साख आसानी से उपलब्ध हो सकती है।

(iii) व्यापारिक साख को किसी संगठन की बिक्री को बढ़ावा देने की आवश्यकता होती है।

(iv) यदि कोई संगठन निकट भविष्य में बिक्री की मात्रा में अपेक्षित वृद्धि को पूरा करने के लिए अपने इन्वेंट्री स्तर को बढ़ाना चाहता है तो यह उसी को वित्त करने के लिए व्यापारिक साख का उपयोग कर सकता है।

(v) यह कोष देते समय फर्म की संपत्तियों पर कोई प्रसार नहीं लगाता है।

व्यापारिक साख- कोष के स्रोत के रूप में व्यापारिक साख की कुछ सीमाएं हैं जो निम्नानुसार वर्णित है-

(i) आसान एवं लचीले व्यापारिक साख सुविधाओं की उपलब्धता एक फर्म को अधिक व्यापार से लिप्त करने के लिए प्रेरित कर सकती है, जो फर्म के जोखिमों को जोड़ सकती है।

(ii) व्यापारिक साख के माध्यम से केवल सीमित राशि ही उत्पन्न की जा सकती है।

(iii) धन जुटाने के अन्य स्रोतों की तुलना में यह आमतौर पर धन का एक महंगा स्रोत है।

11.3.2 बैंक साख

वाणिज्यिक बैंक उन व्यापारिक फर्मों को अल्पकालिक वित्त प्रदान करते हैं, जिन्हें बैंक साख के रूप में जाना जाता है। जब बैंक साख प्रदान किया जाता हे तो ऋणी को अधिकार है जैसे कि वह एक बार या किश्तों में राशि निकाल लें जैसी आवश्यकता हो। बैंक साख में ऋण विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। नकद ऋण, ओवर ड्राफ्ट और बिलों का भुनाना आदि।

(i) ऋण एवं अग्रिम भुगतान- जब एक निश्चित राशि एक विशिष्ट अवधि के बाद चुकाने की शर्त पर बैंक द्वारा दी जाती है, तो इसे बैंक ऋण के रूप में जाना जाता है। इस तरह के अग्रिम को एक अलग ऋण खाते में जमा किया जाता है और उध ारकर्ता को ऋण को पूरी राशि पर ब्याज का भुगतान करना पड़ता है। आमतौर पर ऋण संपत्ति की जमानत के आधार पर स्वीकृत किया जाता है।

(ii) नकद साख- यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत बैंक उधारकर्ता को एक निर्दिष्ट सीमा तक धन निकालने की अनुमति देते हैं। इस सीमा को नकद ऋण सीमा के रूप में जाना जाता है। शुरू में यह सीमा एक वर्ष के लिए दी जाती है। यह सीमा अगले वर्ष के लिए समीक्षा के बाद विस्तृत की जा सकती है। हालांकि, अगर उधारकर्त्ता अभी भी सीमा को जारी रखने की इच्छा रखता है, तो उसे तीन साल बाद नवीनीकृत किया जाना चाहिए। ब्याज की दर भिन्न-भिन्न होती है जो राशि की सीमा की मात्रा पर निर्भर करती है।

बैंक नकद साख के अनुदान के लिए संपारिक सुरक्षा मांगते हैं। इस व्यवस्था में उधारकर्त्ता स्वीकृत सीमा के भीतर राशि का आहरण, पुनर्भुगतान और फिर से आहरण कर सकता है। ब्याज वास्तव में निकाली गई राशि पर ही लगाया जाता है, पूरी राशि की सीमा पर नहीं।

(iii) ओवरड्रॉफ्ट (अधिविकर्षण)- जब कोई बैंक अपने जमाकर्त्ताओं या खाताधारकों को एक निर्धारित सीमा तक अपने खाते में शेष राशि से अधिक पैसे निकालने की अनुमति देता है तो इसे ओवरड्रॉफ्ट सुविधा के रूप में जाना जाता है। यह सीमा उधारकर्त्ता की ऋण योग्यता के आधार पर दी जाती है। बैंक आमतौर पर इस प्रणाली में 20,000 रुपये तक देते हैं, उधारकर्त्ता को हर महीने के प्रत्येक आखिरी शुक्रवार को अपने खाते में एक सकारात्मक शेष दिखाना होता है। ब्याज केवल व्यापार साख धन पर ही लगाया जाता है। ओवर ड्राफ्ट के मामले में ब्याज की दर नकद साख के तहत चार्ज की गई दर से कम होती है।

(iv) बिलों का बट्टे पर भुनाना- बैंक विनियम बिलों को बट्टे पर भुनाकर भी धनराशि देते हैं। जब इन दस्तावेजों को छूट के लिए बैंक के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है तो बैंक छूट की कटौती के बाद ग्राहक के खाते में राशि जमा करते हैं। बट्टा की राशि बिल की अवधि के लिए ब्याज की राशि के बराबर है।

व्यापारिक साख एवं बैंक साख में अंतर-

क्र.	गुण	व्यापार ऋण	बैंक ऋण
1.	समय सीमा	अपेक्षाकृत कम 30,60 या 90 दिनों में	नज़रअंदाज
2.	सुरक्षा	अधिकांशत: असुरक्षित	असुरक्षित ऋण के लिए उच्च मानक, अन्यथा सुरक्षित
3.	शामिल राशि	कम	अधिक
4.	संसाधन का हस्तांतरण	वस्तुओं या सेवाओं पर	मुद्रा
5.	विश्लेषण की सीमा (समय)	गहनात्मक जब लेन-देन का आकार बड़ा होता है	सुरक्षा एवं संग्रहणीयता के उद्देश्य से गहराई से विश्लेषण

11.3.2.1 बैंक साख प्राप्त करने के लिए अपेक्षित प्रतिभूतियों के प्रकार

बैंक द्वारा ऋण और अग्रिम भुगतान किए जाने पर उधारकर्त्ता की व्यक्तिगत जमानत के साथ-साथ फर्म गठित के अतिरिक्त कुछ मूर्त संपत्ति भी जमानत के उद्देश्य से दी जाती है। इस प्रकार बैंक साख के लिए दी जाने वाली जमानत दो प्रकार की हो सकती है।

(i) व्यक्तिगत जमानत

(ii) सम्पत्ति की जमानत

व्यक्तिगत जमानत का अर्थ है ऋण की व्यक्तिगत साख की जमानत बैंक अपनी वित्तीय योग्यता और बैंक के साथ पिछले व्यवहार के आधार पर उधारकर्त्ता की साख योग्यता के साथ न्याय करता है।

अल्पकालिक वित्त विस्तार के लिए बैंकों द्वारा निम्नलिखित मूर्त संपत्तियों को ही स्वीकृति दी जाती है-

(अ) गतिशील (चल) माल- कच्चे माल और तैयार माल का स्टॉक बैंकों द्वारा बैंक साख के लिए सुरक्षा के रूप में स्वीकृत किया जाता है। भुगतान न करने की स्थिति में इन सामानों को बेच दिया जाता है और बैंक द्वारा अपना पैसा वसूल कर लिया जाता है।

(ब) अंश एवं स्टॉक- अंश और स्टॉक जो किसी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में उद्घृत किए जाते हैं, बैंक साख की सुरक्षा के रूप में स्वीकृत किए जाते हैं। उधारकर्त्ता सुरक्षा की। जिम्मेदारी के रूप में इन अंशों को हस्तांतरण प्रपत्र के साथ बैंक के पास जमा करना आवश्यक होता है।

(स) माल के स्वत्वाधिकार दस्तावेज- रेलवे रसीदों का बिल (आर.आर.) माल प्राप्ति (जीआर), वेयर हाउस वारंट विभिन्न दस्तावेज हैं जिन्हें दस्तावेजों के माल के रूप में मान्यता प्राप्त है। बैंक से ऋण सुरक्षित करने के लिए, उधारकर्त्ता इनमें से कोई भी दस्तावेज बैंक के पक्ष में समर्थन के लिए बैंक में जमा करा सकता है। यह किसी भी ऋण देने वाले बैंकों को पुर्नभुगतान में चूक होने पर इन सामानों से वसूली करने में सक्षम बनाता है।

(द) सावधि जमा रसीद- यह बैंक द्वारा जारी की गई रसीद है जिसे ग्राहक द्वारा सावधि जमा के प्रमाण के रूप में जारी किया जाता है। बैंक इस रसीद की सुरक्षा पर ऋण देते हैं। ऋण पर लिया गया ब्याज जमा पर दी गई ब्याज से अधिक होती है। बैंक आमतौर पर ऐसी प्रतियों के मूल्य का 90 प्रतिशत तक ऋण देते हैं।

(य) जीवन बीमा पॉलिसी- बैंक जीवन बीमा पॉलिसी के आधार पर इस तरह की पालिसियों के समर्पण मूल्य की राशि तक ऋण देते हैं।

(र) आभूषण या महंगी धातु- इस प्रकार की जमानत निजी के साथ-साथ व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए भी उधार लेने हेतु की जाती है। कभी-कभी गहने या अन्य कीमती धातु के बदले भी ऋण प्राप्त करने की पेशकश की जाती है।

(ल) अन्य सुरक्षा- उपर्युक्त दस्तावेजों एवं सामग्री जिनका उल्लेख ऊपर किया गया इनके अलावा बैंक द्वारा राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र (एनएससी), इन्दिरा विकास पत्र (आईवीपी) एवं किसान विकास पत्र (केवीपी) के ऊपर भी लघु अवधि के ऋण प्रदान करती है।

11.3.3 आढनि फैक्टरिंग

यह भी एक बिल में छूट कि भांति एक वित्तीय सेवा है जहां पर व्यवसाय के प्राप्य खातों को तीसरे पक्ष को एक मूल्य पर बेचा जाता है जो प्राप्य खातों के वास्तविक मूल्य से कम होता है। इस क्रय समूह को आमतौर पर एक फैक्टर के रूप में जाना जाता है। फैक्टर सेवाओं को बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाता है। कई प्रकार के फैक्टरिंग होते हैं जैसे कि संबंधित या गैर संबंधित आदि।

वित्त के अल्पकालिक स्रोत

फैक्टरिंग एक वित्तीय सेवा है जिसके तहत इसके फैक्टर विभिन्न सेवाओं को प्रदान करता है। जिसमें शामिल हैं-

(अ) इसके तहत बिलों की छूट (पुनरावृत्ति या बिना पुनरावृत्ति)- बिलों को भुनाना (साधनों या साधनों से रहित) और ऋणों का संग्रह: इस विधि में ऐसे प्राप्य विपत्रों को जो कि माल और सेवाओं के विक्रय से होते हैं को फैक्टर को निश्चित बट्टे पर विक्रय कर दिया जाता है। फैक्टर खरीददार से सभी साख नियंत्रण और ऋण संग्रह फर्म के लिए जिम्मेदार हो जाता है और संस्था को डूबते ऋण और हानियों के प्रति सुरक्षा प्रदान करता है। फैक्टरिंग दो प्रकार की होती है। संबंधित और गैर संबंधित सहारा फैक्टरिंग में संस्था की डूबते ऋण से सुरक्षा नहीं होती है। दूसरी तरफ गैर सहारा फैक्टरिंग में फैक्टर सम्पूर्ण साख जोखिम को वहन करता है अर्थात् ऋण के डूबने की स्थिति में संस्था को बीजक की पूरी राशि का भुगतान करना पड़ता है।

(ब) संभावित ग्राहकों की साख योग्यता के बारे में जानकारी प्रदान करना- फैक्टर फर्मों के व्यापारिक इतिहास के बारे में बड़ी मात्रा में जानकारी रखते हैं। यह उन लोगों के लिए फायदेमंद होता है जो फैक्टरिंग सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं क्योंकि इससे उन्हें ग्राहक के खराब भुगतान के रिकार्ड को देखकर उनके साथ व्यापार करने से बचा जा सकता है। ये फैक्टर वित्त, विपणन आदि के क्षेत्रों में प्रासंगिक परामर्श की सेवाएं भी प्रदान कर सकते हैं। इन सेवाओं के परिणामस्वरूप नब्बे के दशक की शुरूआत में फैक्टरिंग केवल भारतीय वित्तीय परिदृश्य में दिखाई दी। संगठन जो इस तरह की सेवाएं प्रदान करते हैं उनमें एस.बी.आई. फैक्टर्स एण्ड कमर्शियल सर्विस लिमिटेड, स्टेट बैंक आफ इंडिया, पंजाब नैशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि हैं। इसके अलावा कई गैर- बैंकिंग वित्त कंपनियां और अन्य एजैंसियां फैक्टरिंग की सेवा प्रदान करती है।

फैक्टरिंग के गुण- लघुतम अवधि के वित्त के स्रोत के रूप में फैक्टरिंग के गुण इस प्रकार हैं:

(i) फैक्टरिंग के माध्यम से धन प्राप्त करना, अन्य साधनों, जैसे कि बैंक के माध्यम से ऋण प्राप्त करने से सस्ता है।

(ii) फैक्टरिंग द्वारा नकदी प्रवाह को तेजी बढ़ाते हुए ग्राहक अपनी देयताओं को समय पर पूरा करने में सक्षम होता है।

(iii) धन के स्रोत के रूप में फैक्टरिंग लचीली होती है और क्रेडिट बिक्री से नकदी प्रवाह का एक निश्चित पैटर्न सुनिश्चित करती है।

(iv) यह फर्म की संपत्ति पर कोई प्रभार नहीं लगता है।

(v) इसके अंतर्गत ग्राहक व्यवसाय के अन्य कार्यात्मक क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं क्योंकि साख नियंत्रण की जिम्मेदारी फैक्टरों द्वारा नियंत्रित की जाती है।

फैक्टरिंग के अवगुण:

(1.) जब चालान/बिल अधिक होते हैं और राशि छोटी होती है तो यह स्रोत महंगा होता है।

(2.) फैक्टर द्वारा प्रदान की जाने वाली अग्रिम वित्त प्राय: सामान्य ब्याज दर से अधिक लागत पर उपलब्ध होती है।

(3.) फैक्टर ग्राहक के लिए एक बाहरी व्यक्ति होता है जो फैक्टर से डील करते समय आराम महसूस नहीं करता।

11.3.4 ग्राहकों अग्रिम

इससे तात्पर्य ग्राहक द्वारा दी गई अग्रिम राशि से है, जो आर्डर दर्ज किए जाने के मूल्य के बदले दी जाती है इसलिए यह जो माल दिया जाना है उसके एक छोटा हिस्सा होता है।

गुण

(अ) ब्याज मुक्त- जो अग्रिम भुगतान होता है वह ब्याज रहित होता है। इसलिए वित्त बिना किसी वित्तीय दबाव के उपलब्ध होता है।

(ब) कोई ठोस सुरक्षा नहीं- ग्राहक से अग्रिम मांग करते समय विक्रेता को कोई ठोस सुरक्षा जमा करने की आवश्यकता नहीं होती है। इस प्रकार संपत्ति नि:शुल्क रहती है।

(स) चुकौती का कोई दायित्व नहीं- अग्रिम में प्राप्त धनराशि का भुगतान नहीं किया जाना होता है इसलिए कोई पुनर्भुगतान का दायित्व नहीं होता है।

दोष

(अ) सीमित राशि- ग्राहक द्वारा उन्नत राशि आदेश के मूल्य के अधीन होती है। उधारकर्त्ता की आवश्यकता उन्नत की मात्रा से अधिक हो सकती है।

(ब) सीमित समय- अग्रिम ग्राहकों की समय सीमा केवल माल की डिलीवरी तक होती है। इसकी समीक्षा या नवीनीकरण नहीं किया जा सकता है।

(स) माल की डिलीवरी नहीं होने की स्थिति में जुर्माना- आमतौर पर अग्रिम इस शर्त के अधीन होते हें कि यदि माल समय पर वितरित नहीं किया जाता है, तो आर्डर रद्द कर दिया जाएगा और उन्नत को ब्याज के वापस करना होगा।

11.3.5 किश्त साख

किश्त साख एक पद्धति है जिसमें कि माल की सुपुर्दगी होते समय कुछ भुगतान करते हैं और शेष भुगतान किश्तों में करना होता है। किश्तों की राशि में ब्याज शामिल होता है।

(i) संपत्ति पर तत्काल कब्जा- प्रारंभिक किश्त देने के बाद माल की सुपुर्दगी मिल जाती है।

(ii) संपत्ति और उपकरण के लिए सुविधाजनक भुगतान- महंगी संपत्ति और उपकरण जो दीर्घ अवधि कोष की अपर्याप्तता के कारण नहीं खरीदे जा सकते, उन्हें भी किश्तों पर आसानी से खरीदा जा सकता है।

(iii) एक बार के निवेश की बचत- यदि परिसंपत्ति या उपकरण का मूल्य बहुत अधिक है, तो एकमुश्त भुगतान किए जाने पर व्यवसाय के धन को अवरुद्ध होने की संभावना है। किश्त साख पद्धति निवेश की बचज की ओर जाता है।

(iv) व्यापार और कार्यालय के विस्तार और आधुनिकीकरण की सुविधा- किश्त साख उपलब्ध होने पर व्यावसायिक फर्म आवश्यक उपकरण और मशीनें खरीद सकते हैं। इस प्रकार, व्यापार और कार्यालय के विस्तार और आधुनिकीकरण को किश्त साख द्वारा सुगम किया जाता है।

किश्त साख के अवगुण

(i) समर्पित व्यय- किश्त का भुगतान व्यवसाय में लाभ या हानि के बावजूद भुगतान करने की प्रतिबद्धता है।

(ii) ब्याज देने का दायित्व- किश्त के तहत साख पद्धति में ब्याज का भुगतान अनिवार्य है। आमतौर पर विक्रेता द्वारा उच्च दर पर ब्याज दिया जाता है।

(iii) चूक की स्थिति में अतिरिक्त बोझ- विक्रेता द्वारा कभी-कभी दंड स्वरूप अतिरिक्त ब्याज के रूप में कठोर शर्तें रखते हैं, अगर खरीददार किस्त की राशि का भुगतान करने में विफल रहता है।

(iv) नकदी प्रवाहमय होती है- व्यापारिक साख की तरह किश्त साख संपत्ति या उपकरण खरीदने की सुविधा प्रदान करता है। यह नकदी उपलब्ध नहीं कराता है जिसका उपयोग सभी आवश्यक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न-11.3

1. उपयुक्त शब्दों/वाक्यांशों के साथ निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करो-

   (अ) भुनाए गए बिल पर भुगतान करते समय, बैंक कटौती करते हैं..... जो बिल की अवधि के लिए ब्याज की राशि के बराबर होती है।

   (ब) जब आपूर्तिकर्त्ता खरीददार को ऋण देते हैं तो उसे..... कहा जाता है।

   (स) व्यापारिक साख..... समय की अवधि के लिए है लेकिन बैंक साख को बढ़ाया जा सकता है (विशिष्ट, अनिश्चित)

   (द) बिल को भुनाना..... तुरंत नकद (प्रदान करता है/प्रदान नहीं करता है)

   (य) नकद साख स्वीकृत करते समय बैंक को चाहिए..... प्रतिभूतियां (सम्पार्श्विक/अग्रिम)

2. निम्नलिखित में से कौन अल्पकालिक वित्तपोषण का सबसे अच्छा विवरण है-

(i) अल्पावधि परियोजनाओं को वित्त देने के लिए धन का उपयोग

(ii) अल्पकालिक परियोजनाओं को वित्त देने के लिए साख का उपयोग

(iii) साख का उपयोग जिसमें पांच वर्ष के भीतर भुगतान किया जाना चाहिए

(iv) साख का उपयोग जिसमें एक वर्ष के भीतर भुगतान किया जाना चाहिए

3. फैक्टरिंग व्यवस्था के अंतर्गत फैक्टर

(i) उत्पादन करता है एवं उसका वितरण करता है

(ii) ग्राहक की वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोक्ता की ओर से ग्राहकों का ऋण संग्रहित करता है।

(iv) माल का प्राप्य बिल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरित करता है।

पाठांत प्रश्न

1. व्यवसाय की विभिन्न आवश्यकताओं को सूचीबद्ध करें, जिसके लिए धन की आवश्यकता होती है।
2. छोटी अवधि की पूंजी के गुण और अवगुण बताएं।
3. किसी भी व्यवसाय के लिए अल्पावधि ऋण क्यों आवश्यक है?
4. अल्पकालीन अवधि के विभिन्न स्रोतों को सूचीबद्ध करें।
5. नकद साख और बैंक ओवर ड्राफ्ट के बीच अंतर के विभिन्न बिन्दुओं को संकलित करें।
6. व्यावसायिक वित्त के तरीकों के रूप में फैक्टरिंग और किश्त साख के गुण और अवगुण को बताएं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

(1.) चालू सम्पत्तियां - चालू दायितव

(2.) वित्तीय प्रबन्ध

11.2

(1.) पूरा करने के लिए

(2.) मितव्ययी

(3.) अल्पकालीन पूंजी

11.3

(1.) छूट

(2.) व्यापारिक साख

(3.) विशिष्ट

(4.) प्रदान करता है

(5.) संपार्शिवक

(6.) साख का उपयोग जिसमें एक वर्ष के भीतर भुगतान किया जाना चाहिए

(7.) ग्राहकों का ऋण संग्रहित करता है।

करें और सीखें

अध्याय में चर्चा किए गए स्रोतों के आधार पर, रेस्तरां के मालिक श्री अनिल सिंह की वित्तीय समस्या को हल करने के लिए उपयुक्त विकल्प सुझाएं (जैसा कि अध्याय की शुरूआत में दिया गया है)

रोल प्ले

अनिल सिंह से प्रेरित होकर उनके चचेरे भाई सुनिल सिंह ने अब सब्जियों और फलों तथा दूध और अन्य आवश्यकताओं को संग्रहित करने के लिए एक आधुनिक सुसज्जित गोदाम खोलने की योजना बनाई है। उसे उसी के लिए आवश्यक धनराशि की जानकारी नहीं है। वह सलाह लेने के लिए अनिल सिंह के पास पहुंचता है-

सुनील : हे अनिल! मेरे पास तुम्हें सफल बनाने के लिए एक बढ़िया विचार है।

अनिल : क्यों नहीं भाई? अपने विचार मुझे बताओ।

सुनील : मैं सोच रहा हूं कि एक बढ़िया वेयरहाउस खोल लूं। जिसमें दैनिक प्रयोग वाले शीघ्र नष्ट होने वाले पदार्थों को सुरक्षित रखा जा सके। इससे आपकी भी बहुत मदद हो जाएगी।

अनिल : लेकिन, मैं यह अंदाजा नहीं लगा पा रहा हूं कि इसको खोलने में कितने धन की आवश्यकता होगी।

सुनील : धन की व्यवस्था के बारे में सोचने से पहले हमें इसके कारकों पर विचार करना चाहिए।

उनका संवाद जारी रखें जिसमें उन्हें स्थिर पूंजी और कार्यशील पूंजी के विभिन्न स्रोतों और प्रभावों के विषय में चर्चा करें।

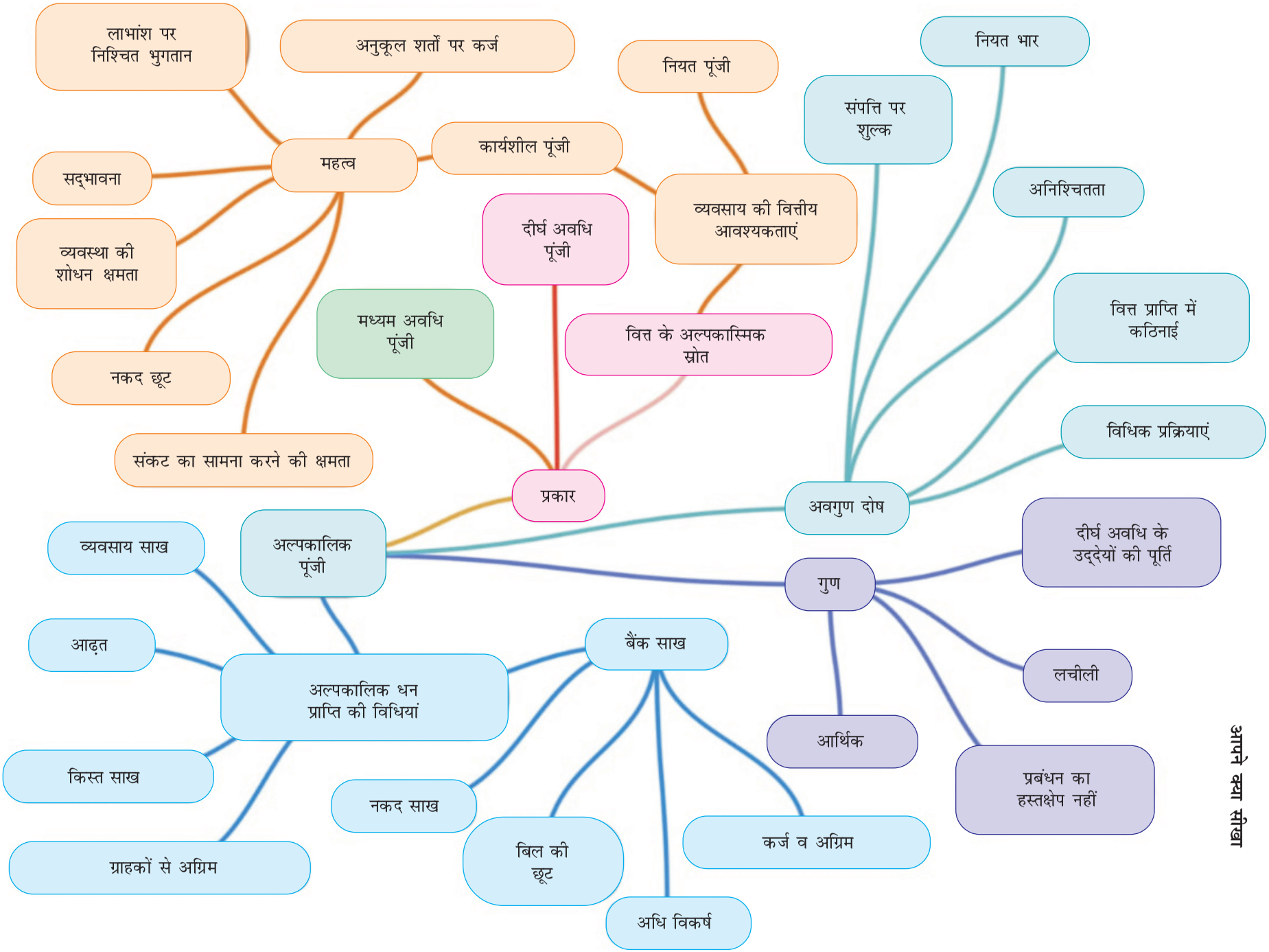
लाभांश पर निश्चित भुगतान
अनुकूल शर्तों पर कर्ज
नियत पूंजी
नियत भार
संपत्ति पर शुल्क
महत्व
कार्यशील पूंजी
सद्भावना
व्यवसाय की वित्तीय आवश्यकताएं
अनिश्चितता
व्यवस्था की शोधन क्षमता
दीर्घ अवधि पूंजी
वित्त प्राप्ति में कठिनाई
मध्यम अवधि पूंजी
वित्त के अल्पकास्मिक स्रोत
नकद छूट
विधिक प्रक्रियाएं
संकट का सामना करने की क्षमता
प्रकार
अवगुण दोष
व्यवसाय साख
अल्पकालिक पूंजी
दीर्घ अवधि के उद्देयों की पूर्ति
गुण
आढ़त
बैंक साख
लचीली
अल्पकालिक धन प्राप्ति की विधियां
आर्थिक
किस्त साख
प्रबंधन का हस्तक्षेप नहीं
नकद साख
बिल की छूट
कर्ज व अग्रिम
ग्राहकों से अग्रिम
अधि विकर्ष

आपने क्या सीखा